REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 6 | MARCH - 2026

भगवान राम के वनगमन पथ मार्ग का पर्यटन विकास एवं राष्ट्रीय एकीकरण पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. रमाकांत शर्मा
शोधार्थी भूगोल, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में भगवान राम के वनगमन से संबंधित स्थल एवं पथ अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह मार्ग केवल धार्मिक आस्था और आध्यात्मिक श्रद्धा का प्रतीक ही नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सामाजिक दृष्टि से भी विशिष्ट महत्व धारण करता है। भारतीय जनमानस में इस पथ से जुड़े विविध स्थलों के प्रति गहरी सांस्कृतिक स्मृतियाँ और परंपराएँ विद्यमान हैं, जो समय के साथ लोक आस्था और सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। वर्तमान समय में इस पथ को पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित करने की दिशा में विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं। विशेष रूप से राम वनगमन पथ को एक समग्र पर्यटन नेटवर्क के रूप में विकसित करने की योजना के अंतर्गत अनेक स्थलों का पुनरुत्थान, आधारभूत संरचना का विकास तथा पर्यटन सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप स्थानीय स्तर पर परिवहन, आवास, संचार तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं में वृद्धि हुई है, जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं तथा सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों को भी नई ऊर्जा प्राप्त हुई है। अध्ययन की पद्धति के अंतर्गत मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों, मानचित्र विश्लेषण, क्षेत्रीय अवलोकन तथा आधुनिक भू–स्थानिक तकनीकों का उपयोग किया गया है। इन माध्यमों के द्वारा संबंधित स्थलों के भौगोलिक वितरण, पहुँच की स्थिति तथा पर्यटन नेटवर्क की संरचना का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, पर्यटन विकास के परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक तथा पर्यावरणीय प्रभावों का भी सम्यक् मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि राम वनगमन पथ का विकास सतत, संतुलित तथा योजनाबद्ध ढंग से किया जाए, तो यह न केवल विन्ध्य क्षेत्र के आर्थिक उत्थान और क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है, बल्कि सांस्कृतिक संपर्कों और परस्पर आदान–प्रदान को सुदृढ़ करते हुए राष्ट्रीय एकता और साझा सांस्कृतिक विरासत की भावना को भी सशक्त बना सकता है। इस प्रकार यह पर्यटन परिपथ सांस्कृतिक पर्यटन के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द – राम वनगमन पथ, धार्मिक पर्यटन, विन्ध्यांचल, सांस्कृतिक भूगोल, पर्यटन विकास, राष्ट्रीय एकीकरण, तीर्थ–परिपथ एवं सतत पर्यटन।

प्रस्तावना –

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में तीर्थयात्राओं और धार्मिक मार्गों का स्थान अत्यंत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण रहा है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक युग तक धार्मिक यात्राएँ केवल आध्यात्मिक साधना का माध्यम ही नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा भौगोलिक स्तर पर भारतीय समाज को एक

सूत्र में संयोजित करने का कार्य भी किया है। विभिन्न तीर्थस्थलों और पवित्र मार्गों ने देश के दूरस्थ क्षेत्रों को परस्पर जोड़ते हुए साझा सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।[1]

इन्हीं ऐतिहासिक–सांस्कृतिक परंपराओं की श्रृंखला में भगवान राम का वनगमन पथ भारतीय सभ्यता और सांस्कृतिक स्मृति का एक विशिष्ट प्रतीक माना जाता है। वाल्मीकि रामायण में वर्णित रामकथा केवल धार्मिक आख्यान नहीं है, बल्कि इसमें तत्कालीन भारत के भूगोल, प्राकृतिक परिवेश, मानव बसावट तथा सांस्कृतिक संपर्कों का भी विस्तृत एवं सूक्ष्म वर्णन प्राप्त होता है।[2]

अयोध्या से लेकर चित्रकूट, दण्डकारण्य तथा पंचवटी तक विस्तृत यह वनगमन मार्ग प्राचीन काल के वनाच्छादित प्रदेशों, नदी घाटियों, पर्वतीय क्षेत्रों तथा जनजातीय अंचलों से होकर गुजरता था। यह मार्ग केवल वनवास अथवा निर्वासन का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह मानव और प्रकृति के सहअस्तित्व, पर्यावरणीय संतुलन तथा सांस्कृतिक संपर्कों की परंपरा का भी सशक्त द्योतक रहा है। कालांतर में इन स्थलों का महत्व और अधिक बढ़ता गया तथा वे तीर्थस्थलों, सांस्कृतिक केंद्रों और लोकआस्थाओं के प्रमुख प्रतीक बन गए।[3]

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में क्षेत्रीय विकास तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति नए दृष्टिकोण विकसित हुए हैं। हाल के दशकों में पर्यटन को आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। विशेष रूप से धार्मिक एवं विरासत पर्यटन ग्रामीण तथा अर्ध–आदिवासी क्षेत्रों में रोजगार और आजीविका के नए अवसर प्रदान कर रहा है।[4]

इसी संदर्भ में राम वनगमन पथ से संबंधित स्थलों को पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित करने की विभिन्न योजनाएँ प्रारंभ की गई हैं। सड़क संपर्क, रेल नेटवर्क का विस्तार, आवासीय सुविधाओं का विकास, तीर्थस्थलों का सौंदर्यीकरण, संग्रहालयों और व्याख्या केंद्रों की स्थापना तथा सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन जैसे प्रयास इन क्षेत्रों को राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर प्रमुखता से स्थापित कर रहे हैं।[5]

भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो विन्ध्यांचल क्षेत्र इस संपूर्ण मार्ग में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों, वनाच्छादित पर्वतों, पठारी संरचनाओं तथा नदी तंत्र से समृद्ध रहा है और ऐतिहासिक रूप से उत्तर भारत तथा दक्कन पठार के मध्य संपर्क सेतु के रूप में कार्य करता आया है। सतना, रीवा तथा प्रयागराज के निकटवर्ती क्षेत्र रामकथा से जुड़े प्रमुख स्थलों के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन क्षेत्रों में पर्यटन विकास से न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिली है, बल्कि पारंपरिक सांस्कृतिक स्वरूप भी नए रूपों में उभरकर सामने आए हैं।[6]

पर्यटन विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय एकीकरण का प्रश्न भी इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण आयाम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से विविधतापूर्ण देश में साझा धार्मिक–सांस्कृतिक प्रतीक सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राम वनगमन पथ विभिन्न राज्यों, भाषायी समुदायों तथा सामाजिक समूहों को जोड़ने वाले सांस्कृतिक गलियारे के रूप में विकसित होने की क्षमता रखता है। देश के विभिन्न भागों से आने वाले श्रद्धालु एवं पर्यटक आपसी संपर्क बढ़ाते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान–प्रदान, परस्पर समझ तथा साझा विरासत की भावना का विकास होता है।[7]

पर्यटन विकास के अनेक सकारात्मक पहलू हैं, इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। तीर्थस्थलों पर बढ़ती पर्यटक संख्या, वन क्षेत्रों पर बढ़ता दबाव, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या, जल संसाधनों पर अतिरिक्त भार तथा स्थानीय जीवन–शैली में परिवर्तन जैसे प्रश्न सतत विकास की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं। यदि पर्यटन विकास योजनाबद्ध तथा पर्यावरण–संवेदी दृष्टिकोण से न किया जाए, तो इससे पारिस्थितिक असंतुलन और सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।[8] अतः इस अध्ययन में पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभावों तथा सतत पर्यटन मॉडल की आवश्यकता पर भी विशेष बल दिया गया है।

अध्ययन की विधि –

अध्ययन–क्षेत्र के चयन में चित्रकूट, सतना, रीवा, प्रयागराज तथा विन्ध्य पर्वतमाला से संबंधित अन्य अंचलों को सम्मिलित किया गया है। इन क्षेत्रों का चयन उनके धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व, पर्यटक आवागमन की तीव्रता, परिवहन संपर्क की उपलब्धता तथा हाल के वर्षों में आरंभ की गई पर्यटन विकास योजनाओं की उपस्थिति के आधार पर किया गया है। अध्ययन–क्षेत्र की भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण प्रशासनिक इकाइयों, प्राकृतिक भौ–आकृतिक संरचनाओं तथा स्थलाकृतिक मानचित्रों की सहायता से किया गया, जिससे क्षेत्रीय विश्लेषण को स्पष्ट आधार प्राप्त हो सके।[9]

पर्यटन विकास की स्थानिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए आधुनिक भू–स्थानिक तकनीकों का उपयोग किया गया है। विशेष रूप से भौगोलिक सूचना तंत्र तथा रिमोट सेंसिंग तकनीक के माध्यम से तीर्थस्थलों के वितरण, सड़क एवं रेल नेटवर्क, भूमि उपयोग परिवर्तन तथा वन क्षेत्रों की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। उपग्रह चित्रों की तुलनात्मक व्याख्या द्वारा पर्यटन विकास से पूर्व और पश्चात् के पर्यावरणीय परिवर्तनों का आकलन किया गया, जबकि सुलभता विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न स्थलों तक पहुँच की स्थिति तथा पर्यटक प्रवाह की प्रमुख दिशाओं को स्पष्ट किया गया है।[10]

सामाजिक–आर्थिक प्रभावों के अध्ययन के लिए स्थानीय समुदायों पर केंद्रित विभिन्न संकेतकों को अपनाया गया है, जिनमें रोजगार के अवसरों में वृद्धि, आय–स्तर में परिवर्तन, पारंपरिक व्यवसायों का रूपांतरण, महिला सहभागिता तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पर्यटन के प्रभाव जैसे पहलू प्रमुख रहे हैं। पर्यटकों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह समझने का प्रयास किया गया कि पर्यटन गतिविधियाँ स्थानीय जीवन–शैली, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं।[11]

राष्ट्रीय एकीकरण पर पर्यटन के प्रभावों के मूल्यांकन के लिए गुणात्मक संकेतकों पर विशेष ध्यान दिया गया है। विभिन्न राज्यों से आने वाले पर्यटकों की संख्या, सांस्कृतिक मेलों एवं धार्मिक आयोजनों में सहभागिता, भाषायी एवं सांस्कृतिक संपर्क तथा सामाजिक समरसता की भावना जैसे पहलुओं का अध्ययन साक्षात्कारों तथा क्षेत्रीय टिप्पणियों के माध्यम से किया गया है। स्थानीय निवासियों और यात्रियों की धारणाओं के विश्लेषण से यह समझने का प्रयास किया गया कि राम वनगमन पथ किस प्रकार एक सांस्कृतिक संपर्क मार्ग के रूप में कार्य कर रहा है और किस सीमा तक राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक एकता को सुदृढ़ कर रहा है।[12]

पर्यावरणीय प्रभावों के अध्ययन में वन क्षेत्रों पर बढ़ते दबाव, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या, जल संसाधनों की उपलब्धता तथा जैव–विविधता पर संभावित प्रभावों को भी सम्मिलित किया गया है। वर्तमान पर्यटन विकास योजनाओं की समीक्षा सतत पर्यटन की अवधारणा के आलोक में की गई तथा यह देखा गया कि संरक्षण और विकास के मध्य संतुलन किस सीमा तक बनाए रखा जा रहा है। अध्ययन की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया तथा संभावित सीमाओं–समय–सीमा, संसाधनों की उपलब्धता और कुछ क्षेत्रों की मौसमी दुर्गमता को स्वीकार करते हुए निष्कर्षों को संतुलित रूप में प्रस्तुत किया गया है।[13] इस प्रकार बहुआयामी अनुसंधान पद्धति के माध्यम से राम वनगमन पथ के पर्यटन विकास तथा राष्ट्रीय एकीकरण पर पड़ने वाले प्रभावों का समग्र भौगोलिक मूल्यांकन किया गया है।

विश्लेषण –

भगवान राम के वनगमन पथ मार्ग से जुड़े स्थलों का भौगोलिक–पर्यटनात्मक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यह मार्ग केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक न होकर एक व्यापक सांस्कृतिक–भौगोलिक परिपथ के रूप में विकसित होने की क्षमता रखता है। विन्ध्यांचल क्षेत्र इस संपूर्ण मार्ग में एक केंद्रीय कड़ी के रूप में उभरता है, जहाँ प्राकृतिक भूरूप, वनाच्छादित पहाड़ियाँ, नदी–घाटियाँ तथा ऐतिहासिक बसावटें एक विशिष्ट सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण करती हैं। चित्रकूट, सतना, रीवा तथा आसपास के अंचलों में स्थित रामायणकालीन स्थल पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण बनते जा रहे हैं। भौगोलिकदृष्टि से इन स्थलों की अवस्थिति पारंपरिक आवागमन मार्गों तथा आधुनिक परिवहन नेटवर्क सड़क, रेल और बस सेवाओं से जुड़ने के कारण इनकी पहुँच में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसने पर्यटक प्रवाह को गति दी है।

स्थानिक वितरण के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राम वनगमन पथ से जुड़े अधिकांश स्थल नदियों के किनारे, पर्वतीय ढालों या वन क्षेत्रों के समीप स्थित हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि प्राचीन काल में प्राकृतिक संसाधनों और जल उपलब्धता ने मार्ग निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी। आधुनिक पर्यटन विकास परियोजनाओं में इन प्राकृतिक विशेषताओं को आकर्षण के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जैसे घाटों का विकास, वन–पथों का सौंदर्यीकरण तथा दृश्यावलोकन बिंदुओं की स्थापना। भौगोलिक सूचना तंत्र (जीआईएस) आधारित अध्ययन से यह भी सामने आता है कि जिन क्षेत्रों में सड़क घनत्व अधिक है वहाँ पर्यटक संख्या अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जिससे पहुँच–सुविधा और पर्यटन विकास के बीच प्रत्यक्ष संबंध स्पष्ट होता है।

पर्यटन अवसंरचना के संदर्भ में विश्लेषण दर्शाता है कि हाल के वर्षों में राम पथ से जुड़े नगरों एवं कस्बों में होटल, धर्मशाला, होम–स्टे, भोजनालय, सूचना केंद्र तथा पार्किंग सुविधाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। तीर्थस्थलों के आसपास शहरीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है, जिससे भूमि–उपयोग स्वरूप में परिवर्तन दिखाई देता है। कृषि भूमि के कुछ भाग व्यावसायिक उपयोग में परिवर्तित हुए हैं, वहीं बाजार क्षेत्रों का विस्तार हुआ है। यह परिवर्तन आर्थिक अवसरों को बढ़ाने के साथ–साथ नियोजन की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है, क्योंकि अनियंत्रित विकास से पर्यावरणीय दबाव उत्पन्न हो सकता है। सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से किए गए विश्लेषण में यह पाया गया कि पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से स्थानीय समुदायों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के लाभ प्राप्त हो रहे हैं। परिवहन सेवाओं, दुकानों, हस्तशिल्प बिक्री, तीर्थ–सेवा, मार्गदर्शन और आवासीय सुविधाओं में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से स्वयं–सहायता समूहों, स्थानीय खान–पान केंद्रों और स्मृति–चिन्ह निर्माण से जुड़ी गतिविधियों में बढ़ी है। इससे ग्रामीण परिवारों की आय में विविधता आई है और कृषि पर निर्भरता कुछ हद तक कम हुई है।

पर्यटकों के प्रवाह के विश्लेषण से यह भी संकेत मिलता है कि धार्मिक अवसरों, पर्व–त्योहारों और मेलों के समय आगंतुकों की संख्या में तीव्र वृद्धि होती है। यह मौसमी प्रवृत्ति स्थानीय अर्थव्यवस्था को अस्थायी रूप से सुदृढ़ करती है, किंतु साथ ही यातायात, जल–आपूर्ति, स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन पर अतिरिक्त दबाव भी उत्पन्न करती है। क्षेत्रीय सर्वेक्षणों में यह पाया गया कि कई स्थानों पर बुनियादी सुविधाएँ भीड़ के अनुरूप पर्याप्त नहीं हैं, जिससे सतत पर्यटन नियोजन की आवश्यकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है। राष्ट्रीय एकीकरण के संदर्भ में किए गए विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि राम वनगमन पथ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और सांस्कृतिक परंपराओं को एक सूत्र में जोड़ता है। उत्तर भारत, मध्य भारत और दक्कन क्षेत्र से आने वाले श्रद्धालु यहाँ एक साथ एकत्रित होते हैं, जिससे भाषायी, सांस्कृतिक और सामाजिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिलता है। विभिन्न राज्यों की पर्यटन एजेंसियों के बीच समन्वय तथा संयुक्त प्रचार–प्रसार अभियानों से इस मार्ग की पहचान एक अखिल–भारतीय सांस्कृतिक परिपथ के रूप में विकसित हो रही है। यह प्रक्रिया सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, साझा विरासत और सामाजिक समरसता की भावना को सुदृढ़ करती है।

पर्यावरणीय प्रभावों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पर्यटन विकास के सकारात्मक आर्थिक परिणामों के साथ–साथ पारिस्थितिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं। वन क्षेत्रों में आगंतुकों की बढ़ती संख्या से जैव–विविधता पर दबाव, प्लास्टिक अपशिष्ट की समस्या, नदी–घाटियों में प्रदूषण तथा जल–उपयोग में वृद्धि जैसी स्थितियाँ सामने आई हैं। उपग्रह चित्रों के तुलनात्मक अध्ययन से कुछ क्षेत्रों में भूमि–आवरण में परिवर्तन के संकेत मिले हैं, जिनमें निर्मित क्षेत्र का विस्तार और खुले हरित क्षेत्र का संकुचन शामिल है। हालाँकि कुछ स्थानों पर स्थानीय प्रशासन और समुदायों द्वारा स्वच्छता अभियान, प्लास्टिक निषेध तथा वृक्षारोपण कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं, जो संरक्षण–उन्मुख प्रयासों की ओर संकेत करते हैं।

भू–स्थानिक विश्लेषण में एक्सेसिबिलिटी मॉडलिंग से यह ज्ञात हुआ कि जिन स्थलों की दूरी प्रमुख राजमार्गों और रेलवे जंक्शनों से कम है, वहाँ पर्यटक घनत्व अधिक पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भविष्य के पर्यटन विकास में परिवहन संपर्क की भूमिका निर्णायक होगी। साथ ही, डिजिटल सूचना–प्रणालियों जैसे मोबाइल ऐप, ऑनलाइन बुकिंग और वर्चुअल गाइड की उपलब्धता भी पर्यटक अनुभव को प्रभावित कर रही है, जिससे आधुनिक तकनीक और पारंपरिक तीर्थाटन का समन्वय परिलक्षित होता है। समग्र विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि राम वनगमन पथ मार्ग का पर्यटन विकास विन्ध्यांचल क्षेत्र में आर्थिक सुदृढ़ीकरण, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और अंतर–राज्यीय संपर्क को बढ़ावा दे रहा है। किंतु इसके दीर्घकालिक लाभ तभी सुनिश्चित किए जा सकते हैं जब विकास योजनाबद्ध, पर्यावरण–संवेदी और स्थानीय समुदायों की सहभागिता पर आधारित हो। अवसंरचना विस्तार, संरक्षण उपायों और सांस्कृतिक विरासत के सम्मान के बीच संतुलन स्थापित करना इस मार्ग को एक आदर्श सांस्कृतिक–पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित करने की कुंजी सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भगवान राम के वनगमन पथ मार्ग का विकास केवल धार्मिक पर्यटन तक सीमित न रहकर एक व्यापक भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में उभर रहा है। इस मार्ग से जुड़े स्थलों की भौगोलिक अवस्थिति, प्राकृतिक परिदृश्य और ऐतिहासिक महत्व ने उन्हें एक विशिष्ट

सांस्कृतिक–पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित होने की क्षमता प्रदान की है। परिवहन संपर्क, आवासीय सुविधाओं और तीर्थस्थल सौंदर्यीकरण जैसे आधारभूत संरचनात्मक विकास ने पर्यटक आवागमन को बढ़ाया है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति प्राप्त हुई है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से स्थानीय समुदायों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के आर्थिक लाभ प्राप्त हुए हैं। रोजगार के नए अवसरों, पारंपरिक हस्तशिल्प के पुनरुत्थान, महिलाओं की सहभागिता तथा ग्रामीण सेवाक्षेत्र के विस्तार ने क्षेत्रीय विकास को सुदृढ़ किया है। इसके साथ ही विभिन्न राज्यों से आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों के आपसी संपर्क ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया है, जिससे राष्ट्रीय एकीकरण और साझा विरासत की भावना को बल मिला है। भू–स्थानिक एवं पर्यावरणीय विश्लेषण यह संकेत करता है कि जहाँ एक ओर पर्यटन विकास से क्षेत्रीय संपर्क और आर्थिक अवसर बढ़े हैं, वहीं दूसरी ओर इससे पारिस्थितिक दबाव, भूमि–उपयोग परिवर्तन, अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियाँ तथा जल–संसाधनों पर अतिरिक्त भार जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। अतः यह आवश्यक है कि भविष्य की पर्यटन योजनाएँ सतत विकास की अवधारणा पर आधारित हों, जिसमें पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी और सांस्कृतिक विरासत का सम्मान केंद्रीय तत्व हों। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि राम वनगमन पथ मार्ग का विकास वैज्ञानिक नियोजन, बहु–राज्यीय समन्वय और जन–सहभागिता के माध्यम से किया जाए, तो यह न केवल विन्ध्यांचल जैसे अपेक्षाकृत पिछड़े क्षेत्रों के सामाजिक–आर्थिक उत्थान में सहायक सिद्ध होगा, बल्कि भारत की सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय चेतना को भी सुदृढ़ करने वाला एक प्रभावी माध्यम बन सकता है।

संदर्भ –

[1] मजूमदार, डी.एन. – भारतीय संस्कृति और समाज, दिल्ली : एशिया पब्लिशिंग हाउस, 2002, पृष्ठ 115

[2] वाल्मीकि, महर्षि – वाल्मीकि रामायण, गोरखपुररू गीता प्रेस, 2016, पृष्ठ 42

[3] शर्मा, आर.एस. – प्राचीन भारत का इतिहास, नई दिल्ली : ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2011, पृष्ठ 186

[4] आहूजा, राम – भारतीय समाज, जयपुर : रावत पब्लिकेशन, 2013, पृष्ठ 254

[5] भारत सरकार पर्यटन मंत्रालय, भारत में पर्यटन नीति रिपोर्ट, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ 78

[6] दुबे, एस.सी. – भारतीय ग्राम, नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 2007, पृष्ठ 132

[7] सिंह, योगेन्द्र – भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण, नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन, 2009, पृष्ठ 174

[8] संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन, सस्टेनेबल टूरिज्म रिपोर्ट, मैड्रिड, 2018, पृष्ठ 64

[9] हुसैन, माजिद – भूगोल की अनुसंधान पद्धति, नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन, 2012, पृष्ठ 85

[10] हे, इयान – मानव भूगोल में गुणात्मक अनुसंधान पद्धतियाँ, ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2010, पृष्ठ 142

[11] आहूजा, राम – भारतीय समाज, जयपुर : रावत पब्लिकेशन, 2013, पृष्ठ 261

[12] भारत सरकार पर्यटन मंत्रालय, पर्यटन सांख्यिकी रिपोर्ट, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 96

[13] संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन, सतत पर्यटन विकास रिपोर्ट, मैड्रिड, 2018, पृष्ठ 73